Think IAS...

दृष्टि The Vision

Think Drishti

छत्तीसगढ़ लोक सेवा आयोग (CGPSC)

दर्शनशास्त्र

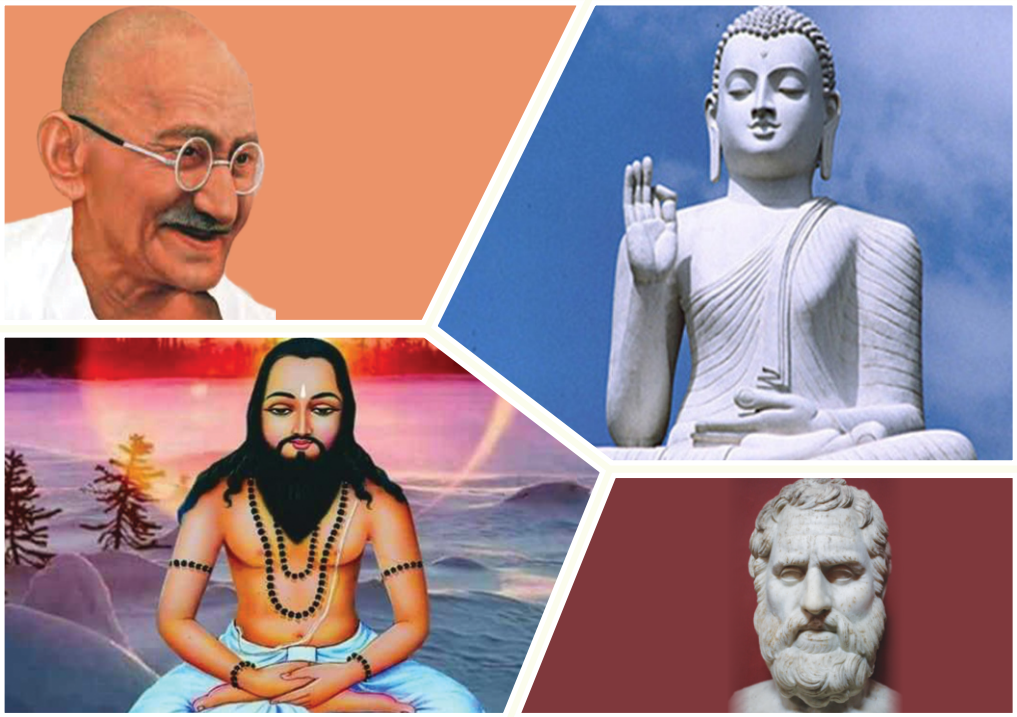

दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम (Distance Learning Programme)

Code: CGM03

छत्तीसगढ़ लोक सेवा आयोग (CGPSC)

दर्शनशास्त्र

641, प्रथम तल, डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
टोल फ्री : 1800-121-6260
Web : www.drishtiIAS.com
E-mail : online@groupdrishti.com

पाठ्यक्रम, नोट्स तथा बैच संबंधी updates निरंतर पाने के लिये निम्नलिखित पेज को "like" करें
www.facebook.com/drishtithevisionfoundation
www.twitter.com/drishtiias

CGPCS DLP

विषय सूची (Contents)

1.	**भारतीय दर्शन**	**5–68**
1.1	दर्शन का स्वरूप	5
1.2	धर्म एवं संस्कृति का दर्शन से संबंध	8
1.3	भारतीय एवं पाश्चात्य दर्शन में अंतर	9
1.4	वेद एवं उपनिषद्	10
1.5	गीता दर्शन	11
1.6	चार्वाक दर्शन	14
1.7	जैन दर्शन	20
1.8	बौद्ध दर्शन	27
1.9	सांख्य दर्शन	33
1.10	योग दर्शन	43
1.11	न्याय दर्शन	47
1.12	वैशेषिक दर्शन	50
1.13	मीमांसा दर्शन	54
1.14	अद्वैत वेदांत दर्शन	55
2.	**भारतीय चिंतक**	**69–84**
2.1	कौटिल्य	69
2.2	गुरु नानक	70
2.3	गुरु घासीदास	72
2.4	वल्लभाचार्य	72
2.5	स्वामी विवेकानंद	73
2.6	श्री अरविंद	75
2.7	महात्मा गांधी	76
2.8	भीमराव अंबेडकर	78
2.9	दीनदयाल उपाध्याय	81
3.	**पाश्चात्य चिंतक**	**85–122**
3.1	प्लेटो	85
3.2	अरस्तू	85
3.3	संत एन्सेल्म	87
3.4	देकार्त/डेकार्ट	88
3.5	स्पिनोज़ा	90
3.6	लाइबनित्ज़	92
3.7	लॉक	97
3.8	बर्कले	100

3.9 ह्यूम 102
3.10 कांट 104
3.11 हेगल/हीगेल 106
3.12 ब्रेडले 112
3.13 मूर 112
3.14 ए.जे. एयर 115
3.15 जॉन डिवी 116
3.16 सार्त्र 117

4. धर्म दर्शन **123–160**
4.1 धर्म का अभिप्राय 123
4.2 धर्मों के विविध प्रकार 126
4.3 धर्म दर्शन का स्वरूप 134
4.4 धार्मिक सहिष्णुता 136
4.5 धर्मनिरपेक्षता 137
4.6 अशुभ की समस्या 148

अध्याय
1

भारतीय दर्शन
(Indian Philosophy)

1.1 दर्शन का स्वरूप *(Nature of Philosophy)*

दर्शन शब्द की निष्पत्ति 'दृश' धातु से हुई है जिसका तात्पर्य है- 'देखना', अर्थात् दर्शन साक्षात् ज्ञान की प्राप्ति का एक माध्यम है। संक्षेप में कहें तो 'दर्शन' निष्पक्ष, बौद्धिक एवं सर्वांगीण ज्ञान की प्राप्ति का तार्किक प्रयास है।

भारतीय दर्शन की उत्पत्ति आध्यात्मिक असंतोष से हुई है। यहाँ के दार्शनिकों ने संसार को दु:खमय माना है। यहाँ जीवन के प्रति अभावात्मक एवं निषेधात्मक दृष्टिकोण विद्यमान है। जीवन का प्रत्येक क्षण दु:खत्रय (आध्यात्मिक, आधिभौतिक और आधिदैविक) की स्थिति के कारण व्यथित रहता है। इतना ही नहीं सुख में भी दु:ख का बीज़ विद्यमान होता है। अत: जीवन के इस दु:ख स्वरूप स्थिति के कारणों पर चिंतन प्रारंभ हुआ और दु:ख के कारणों के स्वरूप के आधार पर निवारण की ओर चिंतन धारा निरंतर प्रवाहित होती चली गई। दु:ख निवृत्ति की जिज्ञासा एवं चिंतन-मनन ने भारतीय दर्शन को जन्म दिया। भारतीय मनीषी दु:ख के मूल कारण पर चिंतन कर इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि अज्ञान या अविद्या ही दु:ख का मूल कारण है। मनुष्य अपने यथार्थ स्वरूप को नहीं जानता है और इसी से वह दु:ख भोगता है। जीवन के यथार्थ स्वरूप, यानी आत्मसाक्षात्कार से समस्त दु:खों से निवृत्ति हो जाती है। यही प्रवृत्ति भारतीय दर्शन को अध्यात्मवादी बनाती है, किंतु भारतीय दर्शन को पूर्णत: आध्यात्मिक मानना उचित नहीं होगा, क्योंकि वैदिककाल से वर्तमान काल तक प्रकृति और जीवन के भौतिक पक्षों पर भी गहन चिंतन किया गया है। अत: भारतीय दर्शन में भौतिकवाद एवं अध्यात्मवाद, दोनों का मिश्रण दिखाई देता है।

भारतीय दर्शन का जीवन से गहरा संबंध है। यह जीवन की समस्याओं एवं दु:ख निवृत्ति के लिये केवल मानसिक जिज्ञासा को शांत करने का प्रयास ही नहीं करता, बल्कि आध्यात्मिक असंतोष तथा जीवन के दु:खों के मूल कारणों को ढूंढ़कर उनसे छुटकारा प्राप्त करने के पूर्ण संभव मार्गों की स्थापना भी करता है। भारतीय दर्शन में चार्वाक का सुखवाद, जैन दर्शन का त्रिरत्न सिद्धांत, बौद्ध दर्शन का आष्टांगिक मार्ग, सांख्य, न्याय, वैशेषिक और वेदांत दर्शन का ज्ञान मार्ग, मीमांसा का कर्मवाद, गीता का निष्काम कर्म आदि केवल दर्शन के सैद्धांतिक पक्ष को ही निरूपित नहीं करते हैं, बल्कि ये सभी सिद्धांत भारतीय दर्शन के व्यावहारिक होने की पुष्टि करते हैं। भारतीय दर्शन में व्यावहारिक पक्ष पर अधिक बल दिया गया है। यहाँ दर्शन का उद्देश्य सिर्फ मानसिक कौतूहल को पूरा करना ही नहीं है, बल्कि जीवन की समस्याओं को सुलझाना भी है। इस प्रकार भारत में दर्शन को जीवन का अभिन्न अंग कहा गया है। जीवन से अलग दर्शन की कल्पना भी संभव नहीं है। प्रो. हरियाना ने कहा है कि "दर्शन सिर्फ सोचने की पद्धति न होकर जीवन पद्धति है।" दर्शन को जीवन का अंग कहने का कारण यह है कि यहाँ दर्शन का विकास जगत् के दु:खों को दूर करने के उद्देश्य से हुआ है। जीवन के दु:खों से क्षुब्ध होकर यहाँ के दार्शनिकों ने दु:खों के समाधान के लिये दर्शन को अपनाया है। अत: भारतीय दर्शन साधन है, जबकि साध्य है- दु:खों से निवृत्त होना।

भारतीय दार्शनिक संप्रदायों में वेदों की प्रामाणिकता के प्रति आस्था और अनास्था के आधार पर दो वर्गों में विभाजित किया गया है। ये दो वर्ग हैं- आस्तिक और नास्तिक। भारतीय दार्शनिक विचारधारा में आस्तिक उसे कहा जाता है, जो वेद की प्रामाणिकता में विश्वास करता है और नास्तिक उसे कहा जाता है, जो वेद को प्रमाण के रूप में स्वीकार नहीं करता है। इस प्रकार आस्तिक का अर्थ है 'वेद का अनुयायी' और नास्तिक का अर्थ है 'वेद का विरोधी'। इस दृष्टिकोण से आस्तिक वर्ग में न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, मीमांसा और वेदांत (षड्दर्शन) दर्शन आते हैं तथा नास्तिक दर्शन के अंतर्गत चार्वाक, बौद्ध एवं जैन दर्शन को शामिल किया जाता है। इस प्रकार नास्तिक दर्शन तीन हैं। इन दर्शन के नास्तिक कहलाने का मूल कारण यह है कि ये वेद की निन्दा करते हैं। कहा भी गया है कि 'नास्तिको वेदनिन्दक:'।

(Producable) तथा प्राप्य (Achievable) होने के कारण अनित्य (Non-eternal) होते हैं, जबकि मोक्ष नित्य (Eternal), अनुत्पाद्य (Unproducable) और अप्राप्य (Non-achievable) है। वह तो अज्ञान (Ignorance) की निवृत्तिमात्र (Removal) है, किसी नए फल की प्राप्ति नहीं। इसके बाद भी शंकर ने कर्मयोग को ज्ञानमार्ग का सहायक अवश्य माना है, क्योंकि निरन्तर सत्कर्म करने से चित् की शुद्धि (Purification of Chitta) होती है।

भक्तिमार्ग (Path of Devotion) भी मोक्ष का उचित मार्ग नहीं है, क्योंकि भक्ति की धारणा मूलत: उपासक-उपास्य के द्वैतभाव (Duality of Devotee-Deity) पर टिकी है। शंकर के अनुसार द्वैतबुद्धि (Dualistic Mindset) या भेदबुद्धि (Differential Mindset) तो स्वयं अविद्या (Ignorance) का ही कार्य है, अत: इसके माध्यम से अविद्या की निवृत्ति (Removal of Ignorance) होना संभव नहीं है। इसके बावजूद, भक्ति का महत्त्व व्यावहारिक स्तर (Practical Level) पर अवश्य है। वह मोक्ष प्राप्ति में भी सहायक है, क्योंकि निरन्तर भक्ति करने से चित्त की एकाग्रता (Concentration of Chitta) बढ़ती है जो ज्ञानमार्ग पर चलने के लिये आवश्यक है।

मोक्ष प्राप्ति का वास्तविक मार्ग ज्ञानमार्ग (Path of Knowledge) है, किंतु ज्ञानमार्ग पर चलने के लिये सभी अधिकारी नहीं हैं। इसका अधिकार उन्हीं को है, जो साधन-चतुष्टय, अर्थात् मोक्ष मार्ग पर चलने हेतु चार तैयारियों (Four fold culture of mind) से युक्त हैं–

1. **नित्यानित्यवस्तुविवेक,** अर्थात् नित्य तथा अनित्य वस्तुओं में भेद करने की योग्यता (Ability to discriminate between eternal and non-eternal)।
2. **इहामुत्रार्थभोगविराग,** अर्थात् लौकिक व अलौकिक भोगों से अनासक्ति (Disinterestedness towards all desires ।
3. **शमदमादिसाधनसंपत्,** (Control over mind and senses and development of qualities such as detachment, patience, concentration etc.), अर्थात् शम, दम, श्रद्धा, समाधान, तितिक्षा तथा उपरति, छ: साधनों से युक्त होना।
4. **मुमुक्षुत्व,** अर्थात् मोक्ष हेतु दृढ़ संकल्प (Ardent desire for Liberation) से युक्त होना।

इन अर्हताओं (Eligibilities) से युक्त मुमुक्षु जब ज्ञानमार्ग पर चलता है तो उसकी साधना तीन चरणों में सम्पन्न होती है–श्रवण (Shravan), मनन (Manan) तथा निदिध्यासन (Nididhyasan)। श्रवण (Shravan) का अर्थ है– योग्य गुरु से उपनिषद् ज्ञान प्राप्त करना। मनन (Manan) का अर्थ है– उस ज्ञान पर निरंतर तार्किक चिंतन (Rational thinking) करना, ताकि बौद्धिक आस्था (Conviction) पैदा हो सके। निदिध्यासन (Nididhyasan) का अर्थ है– ब्रह्म और जीव की एकता (Identity) का तब तक निरन्तर ध्यान (Continuous Meditation) करते रहना, जब तक इस एकत्व (Identity) की निर्विकल्प व अपरोक्ष अनुभूति (Indeterminate and immediate experience) न हो जाए। यह स्थिति प्राप्त होते ही मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है। ध्यातव्य है कि शंकर ने इन तीनों स्थितियों को क्रमिक (Sequential) नहीं, बल्कि युगपत् (Simultaneous) माना है।

आलोचनाएँ

1. यदि आत्मा या ब्रह्म एक ही हैं तो मोक्ष सभी को एक साथ प्राप्त होना चाहिये, जबकि शंकर यह स्वीकार नहीं करते।
2. वैष्णव वेदांतियों के अनुसार सारूप्य मुक्ति काम्य नहीं है, क्योंकि उसमें तो जीव का अस्तित्व (Existence) ही समाप्त हो जाता है। जिसका अस्तित्व ही नहीं है, वह आनन्द की स्थिति (State of Bliss) क्या प्राप्त करेगा?

परीक्षोपयोगी महत्त्वपूर्ण तथ्य

- धर्म एवं संस्कृति का विकास किसी भी समाज में चिंतन की एक प्रक्रिया से होता है और दर्शन चिंतन की इसी संगठित प्रक्रिया का पर्याय है, अर्थात् प्रत्येक धर्म एवं संस्कृति के विकास के पीछे एक दर्शन विद्यमान होता है।
- दर्शन एवं संस्कृति के संबंध में मीमांसा करने पर हम पाते हैं कि दर्शन संस्कृति को तार्किकता प्रदान करते हुए उसे सभी प्रकार के आघातों से सुरक्षा प्रदान करता है।

- भारतीय संस्कृति में कामदेव को अनंग नाम से भी जाना जाता है।
- 'आत्मा की अमरता' सिद्धांत के अनुसार आत्मा का अस्तित्व भौतिक शरीर के नष्ट होने के पश्चात् भी बचा रहता है।
- वैदिक एवं औपनिषदिक परंपरा में 'ऋत्' को 'व्यवस्था का नियम' कहा गया है। 'ऋत्' का शाब्दिक अर्थ उचित या सही है।
- श्वेताश्वतरोपनिषद/श्वेताश्वतर उपनिषद् का शाब्दिक अर्थ सफेद घोड़ा है।
- हदीस को इस्लाम में कानून की तरह स्वीकारा जाता है।
- निष्काम कर्मयोग का पालन करने वाला व्यक्ति ही स्थितप्रज्ञ कहलाता है। इस कठिन मार्ग पर चलने की शर्त है कि व्यक्ति अपने मन तथा इंद्रियों को पूर्णतः संयमित कर ले और फलासक्ति को पूर्णतः त्याग दे।
- गीता में गुणानुसार कर्म करने की व्यवस्था को स्वधर्म कहा गया है, अर्थात् स्वधर्म अपने-अपने गुण के अनुसार कर्म है।
- चार्वाक का दावा है कि अनुमान में निश्चयात्मकता नहीं होती है। इसके अतिरिक्त उसने व्याप्ति का कई आधारों पर खंडन किया है। व्याप्ति को अनुमान का प्राण माना जाता है।
- चार्वाकों के अनुसार जगत् यथार्थ है, क्योंकि वह इंद्रिय प्रत्यक्ष से ज्ञात होता है। उन्होंने जगत् के संबंध में वस्तुवादी मत को स्वीकार किया है।
- नास्तिक दर्शनों में जैन दर्शन अकेला ऐसा है, जिसने जीव या आत्मा को एक नित्य सत्ता के रूप में स्वीकार किया है, क्योंकि चार्वाकों ने तो देह से भिन्न आत्मा को माना ही नहीं और बौद्धों ने चेतना के निरंतर प्रवाह को मानकर भी स्थायी आत्मा की धारणा का खंडन किया है।
- अनेकान्तवाद शब्द में अंत का अर्थ 'धर्म' से भी है और 'वस्तु' से भी, अर्थात् प्रत्येक वस्तु के अनंत धर्म होते हैं तथा वस्तुएँ स्वयं भी संख्या में अनेक हैं।
- जैनों के अनुसार तत्त्वमीमांसा की दृष्टि से न केवल अनेक वस्तुएँ 'सत्' (Real) हैं, बल्कि प्रत्येक वस्तु में अनंत धर्म भी सत् हैं।
- संथारा, संल्लेखना अथवा समाधि मरण जैन दर्शन की आत्मशुद्धि द्वारा भव-सागर (भव-भव) की यात्रा से मुक्ति पाने की परंपरा है।
- प्रतीत्य का अर्थ है- 'किसी वस्तु के उपस्थित होने पर' तथा समुत्पाद का अर्थ है- 'किसी अन्य वस्तु की उत्पत्ति'।
- बुद्ध ने स्थायी आत्मा का खंडन कर चेतना के निरंतर प्रवाह को स्वीकार किया है।
- बुद्ध को बचपन में सिद्धार्थ नाम से जाना जाता था। इन्हें 'एशिया का ज्योति पुंज' भी कहा जाता है।
- नागसेन का कथन है कि जिस प्रकार पहियों, धुरी और रस्सियों इत्यादि के संघात का ही नाम रथ है, वैसे ही आत्मा पंचस्कंधों का संघातमात्र है।
- सांख्य के अनुसार जगत् का विकास प्रकृति से होता है, जो कि सांख्य के 'द्वैतवाद' (Dualism) में पुरुष के अतिरिक्त अन्य सत्ता है।
- यथार्थ अनुभव को प्रमा तथा अयथार्थ अनुभव को अप्रमा कहा जाता है।
- परमाणुवाद के अनुसार सृष्टि की व्याख्या परमाणु संयोग के माध्यम से तथा विनाश या प्रलय की व्याख्या परमाणु वियोग के माध्यम से की जाती है।
- मीमांसा दर्शन 'फल' के वितरण के लिये अपूर्व का सिद्धांत प्रतिपादित करता है। यह दर्शन मानता है कि कोई भी कर्म फलरहित नहीं है।
- शंकर के दर्शन को अद्वैतवाद कहा जाता है, जिसके अनुसार ब्रह्म ही एकमात्र सत् है और वह आत्मा से भिन्न है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. केवल प्रत्यक्ष प्रमाण को कौन स्वीकार करता है? **CGPCS (Pre) 2018**
   (a) जैन (b) चार्वाक
   (c) बौद्ध (d) सांख्य
2. न्याय दर्शन का प्रवर्तक कौन है? **CGPCS (Pre) 2018**
   (a) गौतम (b) कपिल
   (c) शंकर (d) वल्लभ
3. 'स्याद्वाद' संबंधित है: **CGPCS (Pre) 2018**
   (a) चार्वाक से (b) जैन से
   (c) बौद्ध से (d) सांख्य से
4. अपूर्व का सिद्धांत संबंधित है: **CGPCS (Pre) 2018**
   (a) चार्वाक से (b) जैन से
   (c) बौद्ध से (d) मीमांसा से
5. कौन-सा दर्शन त्रिरत्न को मानता है? **CGPCS (Pre) 2017**
   (a) बौद्ध दर्शन (b) न्याय दर्शन
   (c) योग दर्शन (d) जैन दर्शन
   (e) इनमें से कोई नहीं
6. 'क्षणिकवाद' का प्रतिपादन किसने किया? **CGPCS (Pre) 2017**
   (a) बुद्ध (b) जैन
   (c) चार्वाक (d) न्याय
   (e) इनमें से कोई नहीं
7. अनात्मवाद सिद्धांत है:
   (a) सांख्य का (b) वेदांत का
   (c) बौद्ध दर्शन का (d) जैन दर्शन का
   (e) इनमें से कोई नहीं
8. अधोलिखित में से कौन एक गीता की मुख्य शिक्षा है? **CGPCS (Pre) 2017**
   (a) कर्मयोग (b) ज्ञानयोग
   (c) भक्तियोग (d) निष्काम कर्मयोग
   (e) अस्पर्श योग
9. किस उपनिषद् का शाब्दिक अर्थ सफेद घोड़ा है? **CGPCS (Pre) 2016**
   (a) कठोपनिषद् (b) छांदोग्य उपनिषद्
   (c) तैत्तिरीय उपनिषद् (d) ईशोपनिषद्
   (e) इनमें से कोई नहीं
10. भारतीय संस्कृति में निम्न में से किसे अनंग कहा गया है? **CGPCS (Pre) 2016**
    (a) शिव (b) कृष्ण
    (c) काम (d) लक्ष्मण
    (e) इनमें से कोई नहीं
11. निम्न में से किसे भारतीय परमाणुवाद का जनक कहा जाता है? **CGPCS (Pre) 2016**
    (a) महर्षि कपिल (b) महर्षि गौतम
    (c) महर्षि कणाद (d) महर्षि पतंजलि
    (e) इनमें से कोई नहीं
12. भारतीय संस्कृति के अंतर्गत 'ऋत्' का अर्थ है: **CGPCS (Pre) 2016**
    (a) प्राकृतिक नियम (b) कृत्रिम नियम
    (c) मानवीय नियम (d) सामाजिक नियम
    (e) इनमें से कोई नहीं
13. 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' कथन है मूलत:- **CGPCS (Pre) 2016**
    (a) उपनिषद्दों का (b) महाकाव्यों का
    (c) पुराणों का (d) षड्दर्शन का
    (e) इनमें से कोई नहीं
14. निम्नलिखित में से कौन एक 'अष्टांग योग' का अंश नहीं है? **CGPCS (Pre) 2015**
    (a) अनुस्मृति (b) प्रत्याहार
    (c) ध्यान (d) धारणा
    (e) इनमें से कोई नहीं
15. 'समाधि मरण' किस दर्शन से संबंधित है? **CGPCS (Pre) 2015**
    (a) बौद्ध दर्शन (b) जैन दर्शन
    (c) योग दर्शन (d) लोकायत दर्शन
    (e) इनमें से कोई नहीं
16. निम्न में से कौन-सा नाम बुद्ध का दूसरा नाम है? **CGPCS (Pre) 2014**
    (a) पार्ल (b) प्रच्छन्न
    (c) मिहिर (d) गुडाकेश
    (e) इनमें से कोई नहीं
17. हदीस है एक: **CGPCS (Pre) 2014**
    (a) इस्लामिक कानून (b) बंदोबस्त कानून
    (c) सल्तनतकालीन कर (d) मनसबदार
    (e) इनमें से कोई नहीं

18. अद्वैत दर्शन के संस्थापक हैं: **CGPCS (Pre) 2014**
(a) शंकराचार्य (b) रामानुजाचार्य
(c) मध्वाचार्य (d) महात्मा बुद्ध
(e) इनमें से कोई नहीं

19. जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर कौन थे? **CGPCS (Pre) 2013**
(a) पार्श्वनाथ (b) ऋषभदेव
(c) महावीर (d) चेतक
(e) त्रिशाल

20. निम्न में से किस दर्शन का मत है कि वेद शाश्वत सत्य हैं? **CGPCS (Pre) 2013**
(a) सांख्य (b) वैशेषिक
(c) मीमांसा (d) न्याय
(e) योग

21. 'अणुव्रत' शब्द किस धर्म से जुड़ा है? **CGPCS (Pre) 2012**
(a) महायान बौद्ध धर्म (b) हीनयान बौद्ध धर्म
(c) जैन धर्म (d) लोकायत मत
(e) हिंदू धर्म

22. स्थितप्रज्ञ किसे कहते हैं?
(a) फल की इच्छा से मुक्त कर्म करने वाला
(b) निष्काम कर्मयोगी
(c) जंगल में निवास करने वाला
(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

23. पंचमहाव्रत किस दर्शन से संबंधित है?
(a) योग (b) न्याय
(c) सांख्य (d) जैन

24. प्रमा और अप्रमा का क्रमशः अर्थ है:
(a) अयथार्थ और यथार्थ
(b) यथार्थ और अयथार्थ
(c) यथार्थ और आभासिक
(d) अयथार्थ और वास्तविक
(e) इनमें से कोई नहीं

25. 'ब्रह्म' किस दर्शन का सबसे महत्त्वपूर्ण संप्रत्यय है?
(a) योग
(b) बौद्ध
(c) अद्वैत वेदांत
(d) न्याय

उत्तरमाला

1. (b)	2. (a)	3. (b)	4. (d)	5. (d)	6. (a)	7. (c)	8. (a)	9. (e)	10. (c)
11. (c)	12. (a)	13. (a)	14. (a)	15. (b)	16. (e)	17. (a)	18. (a)	19. (b)	20. (c)
21. (c)	22. (b)	23. (d)	24. (b)	25. (c)					

अति लघुउत्तरीय प्रश्न (उत्तर लगभग 30 शब्दों में दीजिये)

1. उपनिषद् का क्या अर्थ है? **CGPCS (Mains) 2017**
2. नास्तिक दर्शन का संक्षिप्त परिचय दीजिये। **CGPCS (Mains) 2017**
3. कणाद द्वारा दी गई 'धर्म' की परिभाषा दीजिये। **CGPCS (Mains) 2017**
4. प्रारब्ध कर्म किसे कहते हैं? क्या इसको नष्ट किया जा सकता है? **CGPCS (Mains) 2016**
5. योग दर्शन के अनुसार 'नियम' क्या हैं? **CGPCS (Mains) 2016**
6. भारतीय दर्शन में षड्दर्शन से क्या तात्पर्य है? **CGPCS (Mains) 2016**
7. क्या दर्शन सभी विषयों की जननी है? **CGPCS (Mains) 2015**
8. जैन दर्शन के अनुसार 'त्रिरत्न' क्या हैं? **CGPCS (Mains) 2015**
9. योग साधना के बहिरंग साधन क्या हैं? **CGPCS (Mains) 2015**
10. आस्तिक एवं नास्तिक दर्शन संप्रदायों से आप क्या समझते हैं? **CGPCS (Mains) 2014**
11. योग की सम्यक् परिभाषा दीजिये। **CGPCS (Mains) 2014**
12. योग दर्शन के अनुसार 'यम' क्या है? **CGPCS (Mains) 2014**
13. 'दर्शन' शब्द के अर्थ को भारतीय संदर्भ में स्पष्ट कीजिये। **CGPCS (Mains) 2013**
14. 'कृतप्रणाश' और 'अकृताभ्युपगम' से आप क्या समझते हैं? **CGPCS (Mains) 2013**
15. दर्शन और संस्कृति के संबंध को स्पष्ट कीजिये। **CGPCS (Mains) 2013**

16. 'दर्शन' जीवन का रूपांतरण है। टिप्पणी करें। **CGPCS (Mains) 2012**
17. 'प्रस्थान त्रयी' से आप क्या समझते हैं? **CGPCS (Mains) 2012**
18. 'पंच स्कंध' का अर्थ स्पष्ट कीजिये।
19. न्याय दर्शन में प्रत्यक्ष प्रमाण की परिभाषा क्या है? सत्कार्यवाद को परिभाषित कीजिये।
20. ऋत् क्या है?

लघुउत्तरीय प्रश्न (उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिये)

1. 'समाधि' योग की पूर्णता है। टिप्पणी करें। **CGPCS (Mains) 2017**
2. योगशास्त्र के अनुसार क्लेश कितने प्रकार के हैं? **CGPCS (Mains) 2017**
3. भारतीय एवं पाश्चात्य दर्शन के मुख्य अंतरों को स्पष्ट कीजिये। **CGPCS (Mains) 2016**
4. क्यों भारतीय दर्शन के संप्रदायों का विभाजन आस्तिक एवं नास्तिक में किया जाता है? **CGPCS (Mains) 2015**
5. "भारतीय दर्शन केवल सिद्धांत नहीं, बल्कि निदान भी है"- व्याख्या कीजिये। **CGPCS (Mains) 2014**
6. भारतीय दर्शन की मौलिक विशेषताओं की विवेचना कीजिये। **CGPCS (Mains) 2013**
7. योग दर्शन के अनुसार 'प्राणायाम' की व्याख्या कीजिये। **CGPCS (Mains) 2013**
8. योग दर्शन के अनुसार चित्त की भूमियों की व्याख्या कीजिये। **CGPCS (Mains) 2012**
9. वेद एवं उपनिषद् में आत्मा को किस प्रकार उल्लेखित किया गया है?
10. स्याद्वाद/स्याद्वाद की आवश्यकता को स्पष्ट करने के लिये जैन दर्शन में क्या उदाहरण दिये गए हैं?

दीर्घउत्तरीय प्रश्न (उत्तर लगभग 100/125/175) शब्दों में दीजिये)

1. भारतीय दर्शन मूलतः आध्यात्मिक है। उदाहरण सहित विवेचना कीजिये। **(100 शब्द) CGPCS (Mains) 2017**
2. क्या भारतीय दर्शन निराशावादी है? विवेचना कीजिये। **(500 शब्द) CGPCS (Mains) 2017**
3. भारतीय दर्शन का जीवन से क्या संबंध है? **(500 शब्द) CGPCS (Mains) 2017**
4. योग साधना के अंतरंग साधनों की व्याख्या कीजिये। **(100 शब्द) CGPCS (Mains) 2016**
5. भारतीय एवं पाश्चात्य दर्शन का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत कीजिये। **(100 शब्द) CGPCS (Mains) 2015**
6. दर्शन क्या है? **(500 शब्द) CGPCS (Mains) 2015**
7. भारतीय दर्शन की विशेषताओं की व्याख्या कीजिये। **(250 शब्द) CGPCS (Mains) 2015**
8. योग दर्शन के अनुसार 'चित्त-भूमियों' की व्याख्या कीजिये। **(100 शब्द) CGPCS (Mains) 2014**
9. योग साधना के अष्टांग मार्ग का विवरण दीजिये। **(100 शब्द) CGPCS (Mains) 2013**
10. 'सर्वधर्मसमभाव' विषयक महात्मा गांधी के दृष्टिकोण की विवेचना कीजिये। **(500 शब्द) CGPCS (Mains) 2013**
11. 'योग' से आप क्या समझते हैं? योग साधना के विभिन्न सोपानों की विवेचना कीजिये। **(500 शब्द) CGPCS (Mains) 2012**
12. 'प्रमा' और 'अप्रमा' के स्वरूप पर चर्चा कीजिये।
13. क्षणिकवाद सिद्धांत की विवेचना कीजिये।
14. मानस और अतिमानस में अंतर स्पष्ट करते हुए इनकी व्याख्या कीजिये।
15. अंबेडकर के सामाजिक चिंतन पर विचार प्रस्तुत कीजिये।
16. प्रकृति एवं स्वरूप की विस्तृत व्याख्या कीजिये।
17. चार्वाक दर्शन की ज्ञानमीमांसा की व्याख्या कीजिये।
18. अपूर्व सिद्धांत की व्याख्या कीजिये।
19. सांख्य दर्शन में उल्लेखित विकासवाद क्या है?
20. मीमांसा दर्शन के अनुसार धर्म की विवेचना कीजिये।

नोटः वर्ष 2018 से पूर्व परीक्षा प्रणाली में दीर्घउत्तरीय प्रश्नों के अंतर्गत 100/250/500 शब्द सीमा वाले प्रश्न पूछे जाते रहे हैं, जबकि नवीन परीक्षा प्रणाली के अंतर्गत 100/125/175 शब्दों के प्रश्न पूछे जाएंगे।

अध्याय
2

भारतीय चिंतक
(Indian Thinkers)

2.1 कौटिल्य *(Kautilya)*

कौटिल्य तीसरी शताब्दी ईस्वी पूर्व के विचारक हैं। उन्होंने संप्रभुता शब्द का प्रयोग तो नहीं किया है, किंतु अपने ग्रंथ 'अर्थशास्त्र' में जो राज्य का 'सप्तांग सिद्धांत' प्रस्तुत किया है, उसके आधार पर उनके विचारों में संप्रभुता की धारणा देखी जा सकती है। प्रसिद्ध इतिहासकार अल्तेकर का दावा है कि कौटिल्य के संबंध में संप्रभुता का चर्चा करना उचित नहीं है, जबकि पी.वी. काणे जैसे इतिहासकारों ने 'सप्तांग सिद्धांत' में प्रयुक्त 'स्वामी' शब्द को 'संप्रभु' का समानार्थक माना है।

सप्तांग सिद्धांत *(Theory of Saptanga)*

कौटिल्य ने राजा या स्वामी को ही संप्रभु के रूप में देखा है। उससे पहले सप्तांग सिद्धांत 'मनु-संहिता' में प्रयुक्त किया जा चुका था, किंतु कौटिल्य का दृष्टिकोण कुछ अलग है। सप्तांग सिद्धांत के अनुसार राज्य सात अंगों से मिलकर बनता है, ठीक वैसे ही, जैसे मनुष्य का शरीर कुछ अंगों से मिलकर बनता है। ये सात अंग इस प्रकार हैं–

1. स्वामी, अर्थात् राजा – जो सिर के समान है।
2. अमात्य, अर्थात् मंत्री – जो आँखों के समान है।
3. सुहृद्, अर्थात् मित्र – जो कान के समान है।
4. कोष – जो मुख के समान है।
5. सेना – जो मस्तिष्क के समान है।
6. दुर्ग – जो बाँहों के समान है।
7. पुर, अर्थात् जनपद – जो जाँघों के समान है।

कौटिल्य ने संप्रभुता की उत्पत्ति के लिये 'दैवी सिद्धांत' (Divine Theory) को स्वीकार किया है। उसके अनुसार, राजसत्ता के उदय से पहले हर तरफ अव्यवस्था व अराजकता थी, जिसमें मात्र 'मत्स्य न्याय' (Survival of the fittest) ही प्रचलित था। यह स्थिति लगभग वैसी ही है, जैसी हॉब्स ने अपने ग्रंथ 'लेवियाथन' में 'प्राकृतिक स्थिति' के रूप में बताई है। जब प्रजा इस स्थिति से त्रस्त हो गई तो उसने सूर्य के पुत्र वैवस्वत मनु को राजा बनाया और उसे इंद्र व यम आदि देवताओं के समतुल्य महत्त्व दिया।

कौटिल्य ने राजा या संप्रभु को लगभग सारी शक्तियाँ प्रदान कर दी हैं जो पश्चिम के एकलवादी संप्रभुता (Monistic Sovereignty) के विचार से मिलती हुई विशेषता है। मनु ने राजा को धर्म के अधीन किया था, किंतु कौटिल्य ने धर्म को भी इतना प्रभावी नहीं बनने दिया। इसी कारण उसे 'भारत का मैकियावली' भी कहा गया है व उसकी संप्रभुता की धारणा को लौकिक धारणा माना गया है, न कि धार्मिक धारणा।

कौटिल्य का संप्रभुता विचार पूर्णसत्तावाद (Absolutism) व सर्वाधिकारवाद (Totalitarianism) की विशेषताओं को धारण करता है। वह पूर्णसत्तावाद के निकट इसलिये है, क्योंकि राजा की शक्ति पर किसी संस्था का नियंत्रण नहीं है। वह सर्वाधिकारवाद के निकट इसलिये है, क्योंकि राजा की शक्ति मात्र राजनीतिक क्षेत्र तक सीमित नहीं है, बल्कि सामाजिक व आर्थिक जीवन के प्रत्येक पक्ष में भी उसी की शक्ति सर्वोच्च है। उसे न सिर्फ शत्रुओं से राज्य की रक्षा करनी है, बल्कि दैवी आपदाओं से बचाव, धर्म का संरक्षण, पारिवारिक संबंधों की पवित्रता की व्यवस्था तथा विभिन्न व्यवसायों से संबंधित नियमों का निर्धारण भी करना है।

अध्याय
3

पाश्चात्य चिंतक (Western Thinkers)

3.1 प्लेटो *(Plato)*

प्लेटो ग्रीस के महानतम दार्शनिक हैं। पाश्चात्य दर्शन का प्रत्येक सिद्धांत किसी-न-किसी मात्रा में प्लेटो के दर्शन से अवश्य प्रभावित रहा है। एथेन्स में प्लेटो ने प्रसिद्ध संस्था 'एकेडमी' (Academy) की स्थापना की। इसी संस्था के माध्यम से वे अध्ययन व अध्यापन कार्य में लगे रहे। प्लेटो का महत्त्व दार्शनिक जगत के साथ ही साहित्य जगत में भी है। प्लेटो द्वारा लिखित प्रमुख पुस्तकें हैं- एपॉलॉजी, क्राइटो, प्रोटेगोरस, जॉर्जियस, मेनो, फीडो, रिपब्लिक। ध्यातव्य है कि ग्रीक जगत में उनके अतुलनीय योगदान के कारण प्लेटो को "पूर्ण ग्रीक" की उपाधि दी गई।

सद्‌गुण *(Virtus)*

सद्‌गुण नीतिशास्त्र नियमों या परिणामों की अपेक्षा व्यक्ति के 'गुण' और गुण में भी 'सद्‌गुण' पर बल देता है। कोई कार्य नैतिक है या नहीं, यह निर्णय इस बात से होगा कि सद्‌गुण से युक्त व्यक्ति उसके संबंध में क्या निर्णय लेता है। उदाहरण के लिये, किसी व्यक्ति में न्याय का सद्‌गुण है तो जटिल-से-जटिल परिस्थिति में भी उसका व्यवहार न्यायपूर्ण ही होगा। इसके अंतर्गत प्लेटो और अरस्तू के सिद्धांतों का अध्ययन महत्त्वपूर्ण है:

प्लेटो का सद्‌गुण सिद्धांत: प्लेटो ने नैतिक व्यक्ति के भीतर चार बुनियादी सद्‌गुणों की बात कही है- (i) विवेक, (ii) साहस, (iii) संयम, (iv) न्याय।

प्लेटो के अनुसार इन चारों गुणों के संवर्द्धन से नैतिक और शुभ जीवन की प्राप्ति होती है। **सुकरात** ने जहाँ ज्ञान को ही सद्‌गुण बताया था, वहीं प्लेटो के अनुसार शुभ जीवन ही जीवन का सद्‌गुण है।

अरस्तू का सद्‌गुण सिद्धांत: पश्चिमी दुनिया में अरस्तू प्रथम लेखक थे, जिन्होंने नीतिशास्त्र पर पुस्तक लिखी। अरस्तू का 'गोल्डन मीन' (Golden Mean) का सिद्धांत उनके सद्‌गुण सिद्धांत के मध्य में है, जिसके अनुसार व्यक्ति को शुभ और अशुभ के अतिरेक से बचना चाहिये। यह काफी कुछ वैसा ही है, जैसा बुद्ध का 'मध्यम प्रतिपदा' का दर्शन है।

3.2 अरस्तू *(Aristole)*

अरस्तू महान दार्शनिक प्लेटो के शिष्य थे। अरस्तू का चिंतन क्षेत्र दर्शन, मनोविज्ञान, भौतिक विज्ञान, प्राणि विज्ञान, आचार-शास्त्र, राजनीति और साहित्य तक विस्तृत है। प्लेटो का दर्शन जहाँ काल्पनिक अधिक था, वहीं अरस्तू के दर्शन में व्यावहारिकता का पुट अधिक रहा। अरस्तू की प्रमुख पुस्तके हैं- भौतिक शास्त्र, तत्त्व-विज्ञान और तर्कशास्त्र। अरस्तू के अनुसार उनका दर्शन पूर्ववर्ती दार्शनिकों के विचारों का समन्वयन है। इस कारण अरस्तू के दर्शन की प्रमुख विशेषता 'तुलनात्मक अध्ययन पद्धति' है।

कारणता का सिद्धांत *(Theory of Causation)*

प्लेटो की तुलना में अरस्तू की प्रवृत्ति अन्य जगत की व्याख्या करने की कम, अपने जगत की व्याख्या करने की अधिक है। संभवत: इसीलिये कुछ दार्शनिकों ने प्लेटो की तत्त्वमीमांसा को परिकल्पनात्मक (Speculative) या स्वप्नदर्शी (Revisionary) कहा है, जबकि अरस्तू की तत्त्वमीमांसा को वर्णनात्मक (Descriptive) कहा है। अरस्तू इस जगत की व्याख्या करने के

अध्याय
4

धर्म दर्शन
(Philosophy of Religion)

धर्म दर्शन उस दार्शनिक क्रिया का नाम है जो धर्म का बौद्धिक विवेचन करता है। जब दर्शन धर्म से संबंधित सभी महत्त्वपूर्ण विषयों की सुव्यवस्थित एवं निष्पक्ष परीक्षण करता है तो उसे 'धर्म दर्शन' की संज्ञा दी जाती है। इस प्रकार धर्म दर्शन का उद्देश्य व्यवस्थित रूप से धर्म को समझना है। धर्म दर्शन उन सभी समस्याओं, मान्यताओं, सिद्धांतों और विश्वासों का तर्कसंगत अध्ययन तथा निष्पक्ष मूल्यांकन करता है जिनका संबंध धर्म से है। धर्म दर्शन का संबंध धर्म के उन सभी पक्षों से भी है जिनके विषय में हम सत्य अथवा मिथ्या होने का प्रश्न उठा सकते हैं और जिसका निष्पक्ष एवं तर्कसंगत मूल्यांकन संभव है। धर्म दर्शन का उद्देश्य किसी व्यक्ति को आस्तिक या नास्तिक बनाना नहीं है और न ही किसी धर्म के पक्ष या विपक्ष में प्रचार करना है। बल्कि मनुष्य के धार्मिक जीवन से संबंधित सभी पक्षों को भलीभाँति समझना एवं उनका तर्कसंगत तथा निष्पक्ष मूल्यांकन करना है।

4.1 धर्म का अभिप्राय *(Meaning of Religion)*

धर्म दर्शन की प्राथमिक समस्याओं में से एक है- धर्म की परिभाषा निर्धारित करना। धर्म की परिभाषा निर्धारित करना अत्यंत कठिन कार्य है क्योंकि एक तो धर्म सतत् परिवर्तनशील है; दूसरे, विभिन्न धर्मों में समानताएँ कम, विभिन्नताएँ अधिक हैं। सभी धर्मों में निहित इस वैविध्य को समेटते हुए विभिन्न चिंतकों ने धर्म की परिभाषा देने का प्रयास किया है। जेम्स एच. ल्यूबा ने अपनी पुस्तक 'धर्म का मनोवैज्ञानिक अध्ययन' में धर्म की पचास से अधिक परिभाषाओं का ज़िक्र किया है और जॉन मार्ले ने तो धर्म की 10,000 परिभाषाएँ बताई हैं, जिससे पता चलता है कि धर्म की कोई एक परिभाषा देना लगभग असंभव है। जॉन हिक ने कहा भी है कि धर्म को परिभाषित करने की कोशिश के स्थान पर सिर्फ उसके लक्षणों की सूची ही बनाई जानी चाहिये।

यदि विश्व के विभिन्न धर्मों का विश्लेषण किया जाए तो कुछ लक्षण इस प्रकार तय किये जा सकते हैं–

1. धर्म एक व्यापक अभिवृत्ति है जिसमें ज्ञानात्मक, भावनात्मक व क्रियात्मक पक्ष निहित होते हैं।
2. धर्म व्यक्ति के संपूर्ण जीवन को गहराई से प्रभावित करता है, न कि आंशिक रूप से।
3. प्रत्येक धर्म अपने ज्ञानात्मक पक्ष में किसी-न-किसी अलौकिक सत्ता या अवस्था को स्वीकार करता है। यह सत्ता ईश्वर ही हो, यह आवश्यक नहीं है। ईश्वर, आत्मा, स्वर्ग या मोक्ष जैसी कोई भी धारणा इसमें हो सकती है।
4. भावनात्मक पक्ष के अंतर्गत प्रत्येक धर्म दु:ख-मुक्ति का आश्वासन देता है।
5. धर्म के अनुयायी विश्वासों के प्रति अखंड तथा निर्बौद्धिक आस्था रखते हैं जिस पर वह कभी संशय नहीं कर सकते।
6. धर्म के अनुयायी अपने धार्मिक प्रतीकों के प्रति पवित्रता की भावना महसूस करते हैं तथा उन्हें अन्य सभी वस्तुओं से उच्च मानते हैं।
7. धर्म व्यक्ति के जीवन में निहित असुरक्षा की भावना को दूर करता है।
8. क्रियात्मक पक्ष के अंतर्गत प्रत्येक धर्म प्रार्थना तथा कर्मकांडों की निश्चित व्यवस्था करता है ताकि धर्म के अनुयायी अपनी आस्था व श्रद्धा को अभिव्यक्त कर सकें।
9. प्रत्येक धर्म अपने अनुयायियों हेतु निश्चित आचरण-विधि प्रस्तावित करता है जो उस धर्म की दृष्टि में नैतिक व्यवस्था कहलाती है।

डी.एल.पी. बुकलेट्स की विशेषताएँ

- आयोग के नवीनतम पैटर्न पर आधारित अध्ययन सामग्री।
- पैराग्राफ, बुलेट फॉर्म, सारणी तथा फ्लोचार्ट का उपयुक्त समावेश।
- विषयवस्तु की सरलता, प्रामाणिकता तथा परीक्षा की दृष्टि से उपयोगिता पर विशेष ध्यान।
- प्रत्येक अध्याय के अंत में विगत वर्षों में पूछे गए एवं संभावित प्रश्नों का समावेश।

Website : www.drishtiIAS.com
E-mail : online@groupdrishti.com

DrishtiIAS

YouTube Drishti IAS

drishtiias

drishtithevisionfoundation

641, First Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-110009
Phones : 011-47532596, +91-8130392354, 813039235456